श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ४

सप्टेंबर /2026

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे। ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे। ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है। ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा। ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. आलोक और परलोक में प्राप्त होने वाले फल से भयाक्रान्त याने .... हो।
२. धर्म के जानकार श्रावक श्राविकाओ ने .... न हो इसकी सावधानी रखनी चाहीये।
३. शास्त्र कहते हैं हमने .... और मुहपत्ती के मेरु पर्वत जितने ढेर किये है।
४. .... नामकर्म के ऊदय से जीव यश और कीर्तिवाला होता है।
५. कायोत्सर्ग के आगार तथा समय स्वरुप और प्रतिज्ञा .... बताई गई है।
६. पुण्य सुंदरता से समझ जायें तो .... के चक्कर अटक जायें।
७. गुरुभगवंत को शिष्य के .... का ख्याल आते ही पश्चाताप पूर्वक उन्हें खमाते हैं।
८. .... जो गति करने में शक्तिमान है।
९. जहाँ इन्द्रियों की .... न हो वहाँ धर्म स्वतंत्रता से संभवित नहीं।
१०. शास्त्रकारों ने .... के सिवाय मेथी, कोथमीर वगैरह अभक्ष्य कहे हैं।
११. श्रावक का जीवन .... पर आधारित है।
१२. विशेष शुद्धि के लिये .... सूत्र बोल कर काउस्सग्ग करने का निर्णय किया जाता है।
१३. गुण थी भरेला .... देखी हैयुं मारु हर्ष धरे।
१४. इरियावही सूत्र से जाने आने की क्रिया करते जो विराधना हुई हो उसका .... किया जाता है।
१५. साध्वीजी .... के रुप से और धर्म से अनेकों को धर्म में आगे बढने की प्रेरणा मिली।
१६. श्री वासुपूज्य स्वामी मासिक अनशन कर .... में मोक्ष गये।
१७. सुगंध अथवा .... शुभ गंध है।
१८. हम अनादि काल से ऐसी .... के कारण अपने परोपकारी को भी पहचान नहीं पाते।
१९. श्री .... प्रभु मार्गशिर्ष वदि चौदस को भद्दिलपुर में केवलज्ञान पाये।
२०. श्रेष्ठ सागर से भी अधिक गंभीर ऐसे हे .... मुझे सिद्धिपद मोक्ष दो।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. गुंगे की तरह हुं हुं करे वह कौनसा दोष ?
२. सुख का अनुभव कौनसा कर्म कराता है ?
३. इरियावही सूत्र का दुसरा नाम क्या ?
४. मेरक नाम के प्रति वासुदेव किन प्रभु के शासन में हुए ?
५. मेथी वगैरह सुकाये गये पत्तों में कैसे जीवों का निर्माण होता है ?
६. नूतन मुनिराज के गुरु का नाम क्या था ?
७. चिंतामणी रत्न को पाने के लिये किसकी आवश्यकता है ?
८. सभी दानो का राजा कौन ?
९. शरीर का उत्तम में उत्तम सर्वश्रेष्ठ आकार कौनसा नामकर्म दिलाता है।
१०. श्री श्रेयांसनाथ प्रभु की माता का नाम क्या था ?
११. कौन से तीन पद प्रतिक्रमण के बीज रुप माने जाते हैं ?
१२. श्री सुविधिनाथ प्रभु का दूसरा नाम क्या है ?
१३. देव-गुरु को नमस्कार कर उनके गुणों की प्राप्ति के लिये क्या आवश्यक है।
१४. कौन से सूत्र से गुणगान पूर्वक वर्तमान चोविशी को वंदन कर उनकी प्रसन्नता मांगी है ?
१५. कौन से नामकर्म के उदय से जीव सभी को मान्य वचनवाला होता है।

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) पावाणं २) उदेहिया ३) मओ ४) मक्कडा-संताणा ५) अणंत ६) छीओणं ७) मणुदुग ८) रयणं ९) जसं १०) किलामिया
११) विहय १२) निमिण १३) जाव १४) ओसा १५) किमि १६) भानु १७) विसल्ली १८) सुभगं १९) भमलिये २०) सव्वगय

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) पुष्करावर्त	१) मानवी	६) एकावली	६) बलदेव
२) तारक	२) पाप का छेदन	७) अगंभीर	७) तप
३) सुदर्शन	३) सर्वगत	८) जन्म-मरण	८) तत्वज्ञान
४) मनुज	४) कुरुप	९) नंदिषेण	९) अनिपुण बुद्धि
५) प्रायश्चित	५) मेघ	१०) आकाशास्तिकाय	१०) संसारचक्र

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. पुण्य कितने प्रकार से बंधता है ?
२. जीवों के भेद कितने ?
३. त्रस जीवों के प्रकार कितने ?
४. श्री वासुपूज्यस्वामी का दीक्षा पर्याय कितने लाख वर्ष का था ?
५. सत्कथी श्रावक का कितनावा गुण है ?
६. पुन्य के कारण रुप शुभकर्म कितने बंधते हैं ?
७. काउस्सग्ग को लगते दोष कितने है ?
८. श्री चंद्रप्रभस्वामी के गणधर कितने थे ?
९. इरियावही के कितने भेदों से मिच्छामी दुक्कडम् दिया जाता है ?
१०. श्री धर्मनाथ प्रभु की ऊंचाई कितने धनुष थी ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. महीष लंछन शीतलनाथ प्रभु का है ।
२. दाल, चांवल में कच्चा दही डालकर खा सकते हैं ।
३. चतुर्विंशति, जिन, नामस्तव याने लोगस्स सूत्र ।
४. अरिष्टनेमि नमिनाथ भगवान का दूसरा नाम है ।
५. जो कार्य करने में स्वतंत्र हो वह कर्ता है ।
६. "चलित रस हुई प्रत्येक वस्तु अभक्ष्य है ।
७. धर्मरत्न को पाने के लिये विधिकार इक्कीस गुणों का वैभव बताते हैं ।
८. इन्द्रिय और देह कमजोर होने पर मन भी दुर्बल बन जाता है ।
९. विनयवान याने पर के हित के कार्य करने वाला हो ।
१०. "अप्पाणं वोसिरामि" इन पदो में कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. ऐसे पुण्यवंत महानुभावो के जीवन धन्यता के पात्र हैं ।
२. सुखी होना है ? तो तुम्हारी संपति का सदुपयोग करना सीखना पडेगा ।
३. पाप कर्मो का नाश करने के लिये, मैं कायोत्सर्ग शरीर के व्यापार का त्याग करता हूं ।
४. हमारी तरह ही सुख की इच्छा रखते हैं, दुःख से दूर होने का प्रयत्न करते हैं ।
५. बापू ने एक दिन का उपवास कर डालना चाहिये तो स्वास्थ भी अच्छा रहेगा ।
६. शक्कर बिना मिष्टान्न ..... नमक बिना भोजन ।
७. चाहे जितने उल्टे पासे डाले सभी सीधे ही पडे ।
८. कार्तिक सुदि तीज को प्रभु केवलज्ञान पाये ।
९. संघयण याने हड्डियों की मजबूत रचना अथवा शरीर की शक्ति ।
१०. शरीर का छेदन अथवा पंचेन्द्रिय का वध सामने होता हो ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जीवोत्पति न हो उसके लिये सावधानी
२) श्री शीतलनाथ प्रभु की संक्षिप्त जीवन यात्रा
३. त्रस दशक
४) सकल कुशल चैत्यवंदन अर्थ सहित लिखो.
५) जहाँ इंद्रियों की परिपूर्णता न हो वहा धर्म स्वतंत्रता से संभवित नहीं । समझाओ

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडर्मी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com